जन नाट्य मंच प्रस्तुति

सत्य-शोधक

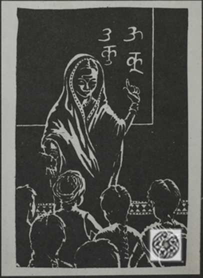

नाटककार की ओर से

जो सत्य की तलाश करता हो, वह है सत्यशोधक। यही नाम—सत्यशोधक समाज उस संगठन (आंदोलन कहना ज़्यादा उचित होगा) का था जिसकी स्थापना ज्योतिबा फुले (१८२७-१८९०) ने की, और जिसके माध्यम से महाराष्ट्र के राजनीतिक और सामाजिक परिवेश का काया-पलट हो गया।

आधुनिक भारत का इतिहास शास्त्र आम तौर पर, हमारे शूद्र सुधारकों के प्रति कुछ क्रूर रहा है और ज्योतिबा के प्रति तो विशेषकर। गेल ऑमवेट तथा रोज़लिन्ड ओहैन्लन द्वारा अपने अध्ययन प्रकाशित किये जाने तक, ज्योतिबा के जीवन पर अंग्रेज़ी या किसी भारतीय भाषा में शायद ही कोई काम किया गया था। फुले एक समाज सुधारक तो थे मगर अधिक महत्वपूर्ण यह है कि उनके पास इतिहास की व्यवस्था करने वाला एक सिद्धांन्त भी था। उनके मत में, सारा इतिहास, वर्ण जाति संघर्ष का इतिहास था।

यह नाटक, उस असाधारण व्यक्ति के जीवन की कुछ झलकियाँ देने का प्रयास करता है जो हाल तक एक विस्मृत, निम्न जाति का नवजागरण का व्यक्तित्व था। उनकी पत्नी भी जिन्हें फुले ने ही शिक्षित किया और जो भारत की पहली शूद्र महिलाओं, कन्याओं के विद्यालय की पहली अध्यापिका बनीं, एक असामान्य व्यक्तित्व थीं। महिलाओं व उनकी समस्याओं पर केन्द्रित एक पत्रिका में, नियमित रूप से लिखने वाली वे शायद पहली स्तंभ लेखिका (columnist) भी थीं। एक दस्तावेज़ी रचना होने के अलावा आशा है कि यह नाटक उस समय के तनावों और नाटकीय आयामों को उजागर करेगा जिसमें ज्योतिबा रहे और जिन्हें रचने में उनकी भी भूमिका रही। इसकी प्रेरणा सत्यशोधक समाज द्वारा विकसित उस नाटकीय शैली से मिली है जिसे 'सत्यशोध की जलसा' के नाम से जाना गया।

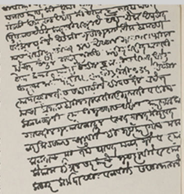

सावित्री बाई का जोतिबा को मोड़ी लिपि में लिखा एक पत्र

इस शैली में अपनी शिक्षा-पद्धति का समन्वय महाराष्ट्रीय लोक-शैली विशेषकर तमाशा से किया गया था। एक अर्थ में यह नाटक उस शैली को एक कदम आगे ले जाने का प्रयास करता है। इस नाटक में पारंपरिक नाट्य रचना शैली और भक्ति काव्य (जिसमें मेरे द्वारा आधुनिक रूप में रचित कुछ भक्ति कविताएं भी शामिल हैं) को विवेचना शैली के नाटक में शामिल किया गया है। भक्ति काव्य को सम्मिलित करने का उद्देश्य यह है कि भक्ति परंपरा से ज्योतिबा के संबंधों के प्रति उचित ध्यान नहीं दिया गया। वे उसके अन्तर्गत होते हुए भी 'आधुनिक' व्यक्तित्व थे या शायद आधुनिकतावादी कहना अधिक उपयुक्त होगा अगर आधुनिकता (modernity) तथा आधुनिकतावाद (modernism) में अंतर किया जाए। फुले के विचारों में यह अन्तर निहित है। जो भी हो, उच्च जाति के सुधार व सुधारकों के प्रति उनकी उभयवादिता इस बात का समुचित प्रमाण है।

डा विश्राम रामजी घोले

नारायण मेघाजी लोखण्डे

अण्णा शिंदे विपलुंकर

जोतिबा फुले

नेहरू कृत 'भारत की खोज' पर बने श्याम बेनेगल के सीरियल के लिए मैंने फुले पर एक संक्षिप्त कड़ी लिखी थी। यह नाटक वह कड़ी नहीं है। मगर यदि मैंने वह कड़ी न लिखी होती तो इतने वर्षों-बाद पुनः फुले का अध्ययन मैं नहीं करता और न ही यह नाटक लिखा गया होता। और निश्चय ही, यदि चन्द्रकांत पाटिल ने स्पीड पोस्ट की तरह इसका अनुवाद न किया होता तथा जनम व मलयश्री हाश्मी ने अंतिम चेतावनी न दी होती तो शायद यह कभी पूरा न होता!

गो. पु. देशपांडे

अनुवादक की ओर से

महाराष्ट्र में सामाजिक सुधारकों की तथा विचारकों की लम्बी परम्परा रही है, और इन सुधारकों ने मात्र महाराष्ट्र का ही नहीं, समूचे देश का वैचारिक नेतृत्व किया है इसे नकारा नहीं जा सकता। जब यहाँ नवजागरण का पहला दौर चला, तब ब्राह्मणों द्वारा शोषित समाज को ब्राह्मण्य से यानि ब्राह्मणवाद से मुक्ति पाने के लिए संघर्ष सिखानेवाले विचारक नेताओं में जोतीबा फुले अग्रणी थे। सभी पददलित शोषित वर्गो की चिन्ता के कारण महात्मा फुले एक ओर मानवीय आस्था से जुड़ी परंपरा से अपना रिश्ता स्थापित करते हैं तो दूसरी ओर समता, बन्धुता, स्वतंत्रता तथा मानवीय गरिमा के साथ जीने की प्रतिष्ठा जैसे आधुनिकता के विभिन्न आयामों से जुड़ जाते हैं — यही कारण है कि महात्मा फुले एक सदी की दूरी लाँघ कर एकदम हमारे समीप आ जाते हैं, हमारे समकालीन हो जाते हैं। मेरा महात्मा फुले की ओर लौटना इस आस्था से संबंध है।

एक अनुवादक के नाते — या यों कहें कि अनुवादक की हैसियत से तो महात्मा फुले की जीवनी तथा विचारों से हिन्दी दर्शकों को परिचित करवाने के लिये मैं इस नाटक की ओर आकृष्ट हुआ ही नहीं बल्कि इस नाटक की अनूठी संरंचनात्मकता से भी मुझे दिलचस्पी हुई थी। इस तरह के नाटकों का प्रयोग देखना समसामयिक समय में विचार और चिन्तन के स्तर पर समस्याओं से मुठभेड़ करना है।

चंद्रकान्त पाटिल

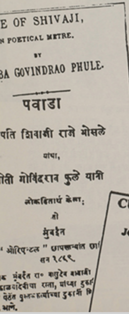
E OF SHIVAJI,
N POETICAL METRE.
BY
BA GOVINDRAO PHULE.
पवाडा
पति शिवाजी राजे भोसले
यांचा,
ोती गोविंदराव फुले यानी
लोकहितार्थ केला;
तो
मुंबईत
"ओरिएन्टल" छापखान्यांत छा
सन १८६९.

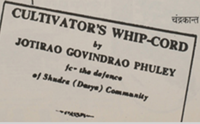
CULTIVATOR'S WHIP-CORD
by
JOTIRAO GOVINDRAO PHULEY
for the defence
of Shudra (Dasya) Community

सत्यशोधक

आभार

- अनिल व कुमी चंद्रा (वीवर्स)
- अरुण तिवारी
- उमा चक्रवर्ती
- फ़ैक्ट एण्ड फ़िक्शन
- नरेश परलीकर
- डा. राजिन्दर नाथ (अभियान)
- लक्ष्मी बहनजी
- संजय भटनागर
- सरदार पटेल विद्यालय
- साफ़दर हाश्मी मेमोरियल ट्रस्ट
- शबनम हाशमी
- जयन्तो व शिप्रा दास
- श्याम बेनेगल
- श्री हेजिब

संगीत	:	श्री रेणु भूषण बैनर्जी
सहायक	:	जोगी
निर्देशक	:	सुधन्वा देशपांडे

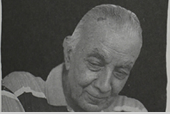

मंच पर

हारमोनियमः	रामजी लाल बंसीवाल, रमेश भाटी
नाल :	के.एल. कमल, रमेश भाटी
मंजीरेः	राकेश भारद्वाज
निवेदक/	जोगी
गायक मंडलीः	सरिता चौहान सुमंगला दामोदरन लवलीन मिश्र प्रवीण दुहान राकेश भारद्वाज बृजेश शर्मा बृजेन्द्र सिंह रेणु भूषण बैनर्जी सोमन सबा ग्रेवाल पूनम हजेला नलिनी कमल नंदिता विजय त्रिसाल/विपुल मयंक
कुलकर्णी :	जोगी
गोऱ्हे :	राकेश भारद्वाज
भागी :	नंदिता
गोविन्दराव फुले :	बृजेश शर्मा
पंडित :	राकेश शर्मा/अमित बहल
जोतिबा (किशोर)	कृष्ण कुमार
जोतिबा फुले :	अनिल चौधरी/राकेश शर्मा
सावित्रीबाई :	लवलीन मिश्र
भिड़े :	संजय पुंडीर

गोवण्डे :	प्रभात कुमार झा/सुमित
थत्ते :	प्रवीण दुहान/विपुल मयंक
गोपाल रामोशी :	विजय कालिया/राम कुमार
लछमी :	सबा ग्रेवाल
भाऊ साहेब :	नरेश पराशर/विजय त्रिसल
अण्णा शिंदे	राकेश शर्मा/कैलाश नेगी
चिपलुंकर :	
ब्राह्मण १ :	जोगी
ब्राह्मण २ :	सोमन
ब्राह्मण ३ :	बृजेन्द्र सिंह
ब्राह्मण ४ :	विपुल मयंक/प्रवीण दुहान
लक्ष्मण रामोशी :	राकेश भारद्वाज
लछमी की मां :	नलिनी कमल
डॉ. घोले :	सुनित कुमार सिन्हा
आदमी :	विजय कालिया/राम कुमार
विष्णुशास्त्री	कैलाश नेगी/अमित बहल
चिपलुंकर :	
केशवराव :	विजय त्रिसल/नरेश पराशर
काशीबाई :	नंदिता
ज़मदाड़े :	विजय कालिया/राम कुमार
हेरम्बशास्त्री :	कैलाश नेगी
अप्पाशास्त्री :	अशोक तिवारी
न्यायमूर्ति रानडे :	नील कमल डोगरा
नारायण लोखण्डे:	अनुराग कश्यप
पादरी :	विजय त्रिसल
विदूषक :	राकेश भारद्वाज
पाटिल :	विजय कालिया/राम कुमार
पाटिल की पत्नी :	सरिता चौहान
जोशी :	बृजेश शर्मा
अन्य :	शक़ील खान,विक्रांत कुमार

मंच - पार्श्व

प्रस्तुति संयोजक :	कैलाश नेगी
मंच व्यवस्था :	बृजेन्द्र सिंह
सैट परिवर्तन:	नरेश, शक़ील, विपुल, त्रिसल
प्रेस प्रचार :	लवलीन मिश्र
स्मारिका सामग्री :	बृजेश शर्मा, लवलीन, विपुल
बॉक्स ऑफिस :	प्रदीप हजेला
प्रदर्शनी :	शैहला ग्रेवाल, लवलीन, अंजु शर्मा
मंच सामग्री :	विपुल मयंक, नरेश पराशर
रूप सज्जा :	राकेश शर्मा
सहायक :	नंदिता
प्रकाश :	गिरधारी जी
सहायक :	राजेश जैस, वसुंधरा
कवितापाठ :	राम गोपाल बजाज
मुखौटे :	दादी पदमजी
वेशभूषा :	शिवानी, शैहला ग्रेवाल
सहायक :	विजय त्रिसल, अंजु शर्मा
सैट, पोस्टर व स्मारिका डिज़ाइन :	ओरिजीत, गुरप्रीत, निकलस थॉमस
सहायक :	विजय कालिया, राकेश शर्मा, राकेश भारद्वाज
मंच निर्माण:	मासूम

लेखक
गोविंद पुरुषोत्तम देशपांडे

अनुवादक
चंद्रकांत पाटिल

संगीत
रेणु भूषण बनर्जी

निर्देशक
सुधन्वा देशपांडे

संगीत सहायक : जोगी